छद्म विज्ञान एक परिचय

आज से समाज में धर्म और विज्ञान के नाम पर हो रही धोखेबाज़ी को पकड़ने के तरीक़े बताती एक लघु पुस्तिका

प्रोफेसर ड़ॉ ऋषि आचार्य

छद्म विज्ञान एक परिचय

छद्म विज्ञान अक्सर उन मान्यताओं या प्रचलन को कहते हैं जो स्वयं के विज्ञान सम्मत और तथ्यपरक होने का दावा तो करते हैं लेकिन इन दावों के पीछे ना तो कोई ठोस सबूत होते हैं और ना नतीजे तक पहुंचने के लिए विज्ञान सम्मत अनुसंधान प्रक्रिया का सहारा लिया जाता है| छद्म विज्ञान का अमूमन इन लक्षणों से पहचाना पहचाना जा सकता है जिनमें विरोधाभासी वक्तव्य, अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन साबित किए जा सकने वाले दावे, सुनी सुनाई बातों पर बहुमत की मान्यता के हिसाब से विश्वास, खुलेपन की अस्वीकृति,विज्ञान सम्मत प्रणाली के अनुसंधान की अनुपस्थिति प्रमुख है|

सत्य विज्ञान और छद्म विज्ञान के बीच वैज्ञानिक और दार्शनिक भेद के महत्वपूर्ण कारण हैं| इन दोनों के बीच फर्क न होने का असर मानव समाज के महत्वपूर्ण घटकों जैसे स्वास्थ्य ,पर्यावरण, शिक्षा, विज्ञान व्यवसाय आदि पर भी होता है|

सत्य विज्ञान से अलग छद्म विज्ञान से भरी अनेकों बातें और मान्यताएं, ज्योतिष, जड़ी-बूटी, चमत्कार, आसमानी ताकतों में विश्वास, सभी मजहबों की विशेष की किताबों में भरी पड़ी है| खुद को विज्ञान संबंधित बताने का दावा करने वाले ऐसे हजारों ग्रंथ और वक्ता सत्य विज्ञान के नाम पर छद्म विज्ञान की रोटियां सेक रहे हैं|

क्यों ली जाती है विज्ञान की ओट ?

एक बड़ा सवाल यह खड़ा होता है कि इन नकली बातों को असली विज्ञान का जामा पहनाने की आख़िर जरूरत क्यों होती है? बात बिल्कुल साफ है सदियों से अशिक्षा के अभिशाप से हमारे आंखों की तर्क परक रोशनी धुंधली पड़ गई थील; ऐसे में धूर्त दगाबाजों का बिना विज्ञान की बात किए चमत्कार दिखाकर लोगों को प्रभावित करना और उनका शोषण करना आसान था|

लेकिन समय के साथ-साथ शिक्षा और सूचनाओं का प्रवेश सामान्य जनमानस में भी होने लगा| चमत्कारों को विज्ञान की कसौटी पर कसे जाने की बातें यहां वहां सुनाई देने लगी| पाखंडियों के पाखंड, विज्ञान की रोशनी में पहली बार नजर आने लगी नजर आने लगे| कटे नींबू से खून निकलना और जलती हुई अंगार को मुंह में निगल लेना अब कोई बड़ी सिद्धि की बात नहीं बल्कि सामान्य रासायनिक एवं भौतिक सिद्धांत लगने लगा| ऐसे में पहली बार तथाकथित धर्म के ठेकेदारों को अपनी कुर्सी खतरे में नजर आई|

थक हारकर जब कोई उपाय न सुलझा तो सभी अपने अपने मजहबी सिद्धांतो को पहली बार विज्ञान सम्मत धर्म कहने की बातें उठाने लगे| क्या हिंदू क्या मुसलमान क्या जैन और क्या बौद्ध, ईसाई सभी के सभी अपने दावों शास्त्रों और मान्यताओं को वैज्ञानिक सिद्ध करने की कोशिश में लग गए| इंटरनेट पर जाकर साइंस इन हिंदूइस्म, इस्लाम क्रिश्चियनिटी या कोई और धर्म का शब्द जोड़कर एक बार Google पर सर्च कर कर देख ले आपको लाखों पन्ने विज्ञान के चिराग के तले अपनी अग्निपरीक्षा देते हुए तैयार मिलेंगे|

छद्म विज्ञान का इतिहास

छद्म विज्ञान को अंग्रेजी में 'सुडो साइंस' कहा जाता है| सुडो एक ग्रीक भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है 'झूठ' और साइंस शब्द लैटिन शब्द 'साइंटिस्ट' से निकला है जिसका शाब्दिक अर्थ होता है 'ज्ञान' हालांकि छद्म विज्ञान या सूडो-सांइस शब्द का उपयोग पहली बार 18 वीं सदी में सन 1796 में जेम्स पैरेट एंड्रियू ने किया था परंतु उन्नीसवीं सदी के मध्य में सन 1844 के आसपास नॉर्दन जर्नल ऑफ मेडिसिन में पहली बार इस शब्द सूडों-साइंस का आधिकारिक प्रयोग देखने को मिलता है|

जो की उन तर्कों अथवा घटनाओं को बताने के लिए किया जाने लगा जोकि बगैर वैज्ञानिक प्रविधियों के भी खुद को तर्कसम्मत और वैज्ञानिक होने का दावा करते हैं|

छद्म विज्ञान के दावे

21वीं सदी तक आते-आते इस तरह के क्षेत्र में विज्ञान भरे दावों की भरमार हो गई कोई किसी मंत्र को नासा के वैज्ञानिकों की रिसर्च के हिसाब से सर्वाधिक शक्तिशाली बताने लगा तो कोई ग्रहों का हमारी किस्मत बनाने और बिगाड़ने के लिए ज्योतिष की चालबाजियों को विज्ञान सम्मत कहने लगा| कहीं आत्मा का वजन नापने के दावे होने लगे तो कहीं मूर्ति के दूध पीने के| कभी मदर मेरी की मूर्ति से आंसुओं की धारा निकलती तो कभी किसी बकरे के पेट पर अपने आप चांद तारे का निशान बन जाने से बन जाने के फोटो सोशल मीडिया पर वायरल होने लगे| बड़े-बड़े रूम साइज़ के गद्दों में बाबा लोग बड़े-बड़े रूम साइज के गड्ढो में बाबा लोग 10-12 घंटे की समाधि करके बाहर

आते तो भोली जनता विज्ञान को चमत्कार मानकर जय जयकार करते नहीं थकती|

जो जितनी अच्छी तरह विज्ञान के सिद्धांतों और प्रचलित विश्वासों का घालमेल कर सका वह उतना ही बड़ा वैज्ञानिक धर्मवादी कहा जाने लगा| कभी नासा के नाम से तो कभी रूस के वैज्ञानिकों के नाम से इतने बड़े-बड़े दावे किए जाने लगे जिसकी ना तो कभी नासा ने पुष्टि की और न रूस के वैज्ञानिकों की कोई समिति ने| हद तो तब हो गई जब घर की लैब में ही घर के सिद्धांतों को वैज्ञानिक अनुसंधान का जामा पहनाकर वैज्ञानिक कसौटी पर सो प्रतिशत खराब साबित होने की दलीलें दी जाने लगी|

आइए आप जरा समझते हैं कि विज्ञान सम्मत होने का वास्तविक अर्थ क्या है

1942 में कोलंबिया यूनिवर्सिटी के प्रख्यात समाजशास्त्री रॉबर्ट किंग मेहरबान ने पांच आवश्यक्ताओं के एक समूह सिद्धांत का प्रतिपादन किया जो मोटे तौर पर सत्य विज्ञान को छद्म विज्ञान से अलग करने में मदद करता था इन कसौटियों को मेरिट-आन नियमों के नाम से जाना जाता है| यह कसौटियां इस प्रकार है

१. **मौलिकता** : - प्रयोग और अनुसंधानों के द्वारा विज्ञान जगत को कुछ नवीन तथ्य या पदार्थ की प्राप्ति होनी चाहिए

२ **पृथकता** : प्रयोगकर्ता का उद्देश्य अनुसंधान के पीछे केवल ज्ञान का विस्तार अथवा और गहरी खोज होनी चाहिए| उसके व्यक्तिगत

कारण किसी परिणाम विशेष के ही प्राप्त होने की उम्मीद नहीं होना चाहिए|

३ **समरूपता** : सामाजिक भेद, धर्म, जाति, रंग-रूप, भाषा और क्षेत्रीयता की सीमाओं से परे भी अन्य व्यक्तियों द्वारा प्रविधि का ठीक एवं पूर्णरूपेण पालन करने के बाद परिणामों में किसी प्रकार की भिन्नता नहीं रहनी चाहिए| अर्थात जो प्रयोग और परिणाम मुख्य अनुसंधानकर्ता को प्राप्त हुआ अन्य अनुसंधानकर्ताओं को भी समान रूप से प्राप्त होना चाहिए| वह भी बिना किसी अतिरिक्त कठिनाई अथवा श्रम के|

४ **संदेहवाद**: वैज्ञानिक तथ्य या बात, विश्वास के जोर से मुक्त होनी चाहिए| उसे सदैव प्रश्नों के, संदेह के, पुनर्प्रयोग के और असत्य परिणामों को हटाए जाने के लिए प्रस्तुत होना चाहिए|

५. **उपलब्धता**: कोई भी वैज्ञानिक ज्ञान जिसे एक बार प्राप्त कर लिया गया हो अन्य सभी व्यक्तियों के द्वारा उपयोग कर सकने के लिए उपलब्ध होना चाहिए| किसी भी वैज्ञानिक अनुसंधान के परिणाम को वैज्ञानिक समितियों के बीच में प्रस्तुत करना, वैज्ञानिक प्रपत्रों अथवा शोध कार्यक्रमों में प्रस्तुत करना या छुपाया जाना आवश्यक है|

ये पांच कसौटियाँ ऐसी है जिसके द्वारा आप यह मोटे तौर पर जान सकते हैं कि कोई तथ्य या दावा सत्य विज्ञान है या छद्म विज्ञान|

कुछ प्रमुख उदाहरण छद्म विज्ञान के कुछ प्रमुख उदाहरण जो विज्ञान सम्मत ना होते हुए भी विज्ञान की सम्मति का दावा करते हैं उनमें प्रमुख रूप से एक्यूपंचर, ज्योतिष, कुंडलिनी चक्र, परा सामान्य

पौधे, भविष्य दर्शन, पूर्व जन्म स्मृति, वास्तुशास्त्र, देवी देवता पीर फ़क़ीर का किसी मनुष्य की देह में आना आदि प्रमुख हैं|
 सन 2006 में यूएस के राष्ट्रीय विज्ञान संगठन ने एक प्रपत्र जारी किया जिसमें कहा गया कि आधुनिक समय में छद्म विज्ञान के दावे बड़े पैमाने पर समाज में फैले हैं| इनमे मुख्य रूप से शैतानी ताकतों द्वारा किसी घर अथवा इमारत पर कब्जा, भूत-प्रेत, टेलीपैथी, मृतकों से संपर्क, पुनर्जन्म की घटनाएं और अदृश्य शक्तियों का माध्यम बनने के दावे प्रमुख हैं| हमारे देश में भी छद्म वैज्ञानिकों की कमी नहीं है जो इस तरह के दावों के बीच भोली भाली जनता को विज्ञान के नाम पर मूर्ख बनाते रहते हैं|

शहरों में वास्तु शास्त्रियों पिरामिड बेचने वालों नग और तरह-तरह के रत्न, अंगूठी बेचने वालों, फैंगशुई के बांस और सुनहरी बिल्लियां और ड्रैगन बेचने वालों और चुंबक चिकित्सा के नाम पर पढ़े-लिखे अनपढ़ों की जेब ढीली करवाने वालों की कोई कमी नहीं है|

कैसे पहचाने छद्म विज्ञान को?

 छद्म विज्ञान को पहचानने के लिए किसी डिग्री विशेष की जरूरत नहीं है बल्कि यह काम तो कोई भी शिक्षित मनुष्य थोड़ी सी तार्किकता और समझदारी के साथ कर सकता है|

छद्म विज्ञान के दावों को पकड़ने के लिए आपको उन पर थोड़ा गौर करना होगा जैसे

भाषा: अगर आप गौर करें तो पाएंगे कि छद्म विज्ञान की घोषणाओं में अक्सर विज्ञान के शब्दों का प्रयोग तो होता है लेकिन अमूमन यह बेसिर-पैर के दावे होते हैं जैसे की एक प्रचलित मैसेज जो सोशल मीडिया पर आम है कि विदेशी कोल्ड ड्रिंक में किसी ने एचआईवी से ग्रसित व्यक्ति के खून की एक बूंद मिला दी है इसलिए इसे मत पिये|

मुद्दों का क्षेत्रीयकरण: छद्म विज्ञानी अक्सर विज्ञान की भाषा में तत्कालिक रूप से समाज में चल रहे मुद्दों पर हमला करते हैं| जैसे किसी बड़े व्यक्ति की आकस्मिक मृत्यु के पश्चात उसकी आत्मा का दिखाई देना| प्रख्यात राजनीतिक हस्ती जयललिता की मृत्यु के बाद उनकी समाधि के आसपास उनके भूत के दिखाई देने की खबरें काफी चर्चा में रही|

प्रगतिकालीन: इसमें अक्सर विज्ञान की पहुंच उसी दावे तक सिमट कर रह जाती है और उसके आगे के वैज्ञानिक अनुसंधान में कोई उपयोग नहीं दिखता जैसे एक रोचक तथ्य गाय के गोबर से बने कंधों पर एक चम्मच घी डालने से 1 टन ऑक्सीजन पैदा होने के दावों को रूसी वैज्ञानिकों द्वारा सत्य पाया जाना

छद्म विज्ञान के दावे अक्सर वैज्ञानिक तर्क और प्रश्नों से दूर मनुष्य की आस्था या कमजोर मनोभाव का लाभ उठाते देखे गए हैं| जय श्री वृंदावन के बगीचे में रात को राधा-कृष्ण के घुंघरू की आवाज सुनाई देना या फिर किसी दरगाह में पीर फकीर की राख से बीमारियों का खत्म हो जाना|

विज्ञान किसी बात को केवल इसलिए सत्य नहीं मान लेता क्योंकि उसे बहुत समय से बहुत से लोगों द्वारा कहा गया या माना जा रहा है कि एक समय था जब धरती की आधे से अधिक आबादी पृथ्वी को चपटा भी मानती थी और सौरमंडल के केंद्र में भी लेकिन सच्चाई इसके ठीक विपरीत निकली टिब्बा इतिहास में ऐसे अनेकों उदाहरण देखे जा सकते हैं जहां एक बड़े समूह द्वारा माने जाने वाली घटना एक बड़े भारी असत्य और अंधविश्वास के अलावा और कुछ न निकली|

आज समाज में विज्ञान को विषय की तरह तो लगभग हर विद्यालय में पढ़ाया जा रहा लेकिन वैज्ञानिक चित्त के निर्माण में हम कब काफी पीछे हैं| जिस समाज में बच्चों की जिज्ञासाओं को धर्म या समाज के क्रोध के डंडे से कुचल दिया जाता हो जहां सवालों को उत्तर के स्थान पर तमाचा और उलहाना मिलती हो ऐसे समाज में 21वी सदी में अवैज्ञानिकों नागरिकों की दुखद कारस्तानियों सामने आती रहे तो इसमें अचरज की क्या बात है?

आज हमें जरूरत है कि विज्ञान के नाम पर चल रहे छद्म वैज्ञानिकों के दावों को शक्ति की पांचों कसौटियों पर कसा जाए| जो खरा न उतरे वह चाहे फिर कितना भी पुराना और प्यारा क्यों न हो उसे अस्वीकृत घोषित कर दिया जाए|